

डाली जाती हैं यथा- कुर्ते की पलेट, पैंट की पलेट आदि।

पलेटन पुं. (अं.) छापे के यंत्र या मुद्रण/प्रेस में लोहे का वह चिपटा भाग जिसके दबाव से कागज पर अक्षर छपते हैं।

पलेथन पुं. (देश.) 1. सूखा आटा, वह सूखा आटा जिसे रोटी बेलते समय चकले या पाटे पर बिखेरा जाता है ताकि गीला आटा उस पर चिपके नहीं, परोधन 2. दे. परथन 3. किसी बड़े व्यययाहानि के फलस्वरूप होने वाला अनावश्यक व्यय मुहा. पलेथन निकालना- मारपीट करके अधमरा करना, कचूमर निकालना।

पलोटना स.क्रि. (देश.) 1. पैर दबाना (सेवा भाव से) 2. सेवा करना 3. अ.क्रि. 1. लोट-पोट होना 2. भारीशारीरिक कष्ट से तड़फड़ाना, छपटपटाना।

पलोथन पुं. (तद्.) दे. पलेथन।

पलटन स्त्री. (अं.) दे. पलटन (प्लैटून)।

पल्यंक पुं. (तद्.) (पर्यंक) पलंग, खाट, शय्या।

पल्ययन पुं. (तत्.) 1. घोड़े की पीठ पर बिछाने वाला आसन या गद्दी, जीन 2. दे. पलान।

पल्ल पुं. (तत्.) 1. अन्न रखने का स्थान, अन्न की कोठरी, खत्ती, अन्न-संचय स्थल 2. पाल या वह विशेष स्थान जहाँ कच्चे फल रखे जाने पर पक जाते हैं (कच्चे फलों को पकाने के लिए रखे जाने वाला स्थान)।

पल्लड़ पुं. (देश.) तराजू का एक ओर का पलड़ा।

पल्लव पुं. (तत्.) 1. नया तथा कोमल पत्ता, पत्तों का समूह या गुच्छा, कोंपल, कोमल लाल पत्ता 2. नृत्य करते हुए हाथ की एक विशिष्ट मुद्रा 3. साड़ी आदि का पल्ला, वस्त्र का छोर 4. दक्षिण भारत का एक प्रसिद्ध राजवंश जो कभी उड़ीसा से तुंगभद्रा नदी तक फैला था 5. घास का नया कनखा, नई पत्ती 6. विस्तार।

पल्लवक पुं. (तत्.) 1. एक प्रकार की मछली 2. अंकुर, कोंपल 3. वेश्या का घर 4. अशोक वृक्ष।

पल्लवग्राहिता स्त्री. (तत्.) अधूरा, अपूर्ण या सतही ज्ञान होने की स्थिति या वृत्ति।

पल्लवग्राही वि. (तत्.) 1. अपूर्ण जानकारी मात्र रखने वाला, किसी विषय का सम्यक् ज्ञान न रखने वाला, ऊपरी या सतही बातों को ही जानने वाला, स्थूल ज्ञान रखने वाला।

पल्लवन पुं. (तत्.) विशेष विस्तार करना, विस्तार पूर्वक विवेचन करना।

पल्लवाद पुं. (तत्.) हिरण (कोपल भक्षी)।

पल्लवाधार पुं. (तत्.) डाली या शाखा जिस पर पत्ते लगते हैं।

पल्लवास्त्र पुं. (तत्.) कामदेव, किसलय, कोपल, पुष्प आदि जिनके अस्त्र हैं।

पल्लवित वि. (तत्.) 1. पल्लवयुक्त, नए पत्तों से युक्त 2. हरा-भरा, लहलहाता हुआ 3. जिसका विस्तार किया गया हो, विस्तृत, फैला हुआ, बढ़ाया हुआ 4. लंबा-चौड़ा 5. जिसे रोमांच हुआ हो।

पल्लवी वि. (तत्.) जिसमें नए पत्ते निकले हों पुं. वृक्ष, पेड़।

पल्ला पुं. (तद्.) 1. किसी वस्त्र का किनारा, छोर, आँचल, दामन मुहा. पल्ला छूटना- साथ छूटना, छुटकारा पाना; पल्ला छुड़ाना- बंधन से निकलना; पल्ला पकड़ना- रक्षा, सहायता अथवा अपने कार्य के लिए किसी का सहारा लेना; पल्ला पसारना- अनुग्रह, या भिक्षा हेतु किसी के सामने प्रार्थी होना, विनय करना; पल्ले पड़ना- किसी व्यक्ति या वस्तु का भार-स्वरूप प्राप्त होना, गले पड़ना; पल्ले बाँधना- विवाह के बाद किसी की पत्नी या पति बनकर रहना, किसी के जिम्मे हो जाना; पल्ले बाँधना- किसी बात या नसीहत को गाँठ बाँधना, पक्का स्मरण रखना; पल्ला करना- पर-पुरुष या बड़ों से घूँघट करना; पल्ला लेना- मुँह पर घूँघट डाल लेना 2. कुछ विशिष्ट वस्तुओं के दो विभिन्न परंतु प्रायः समान आकार-प्रकार वाले घटकों में से एक जैसे- दरवाजे का पल्ला, कैची का पल्ला, तराजू का पल्ला 3. रजाई या